अध्याय–3
राष्ट्रमंदिर का सुवासित पुष्प : केसरीसिंह बारहठ

–डॉ. रामचरण महेन्द्र

स्वाधीनता यद्यपि एक जन्मसिद्ध अधिकार है, लेकिन इस अधिकार की प्राप्ति के लिए संघर्ष की रक्त गाथा लिखने वाले आत्मबलिदानियों की एकांतिक पीड़ा व्यथा को अभिव्यक्ति देने के लिए समाज और इतिहास के पास शब्द कहाँ हैं ? वे रोशनी की लकीरें, जिन्होंने स्याह अंधेरे को चीर कर आजादी की राह बनाई, स्वयं को ही नहीं, सम्पूर्ण परिवार को और उनके जीवन को ही देश की आजादी के लिए दाँव पर लगा दिया, उन्हीं गिने–चुने स्मरणीय एवं वंदनीय अमर हुतात्माओं में से एक थे – ठाकुर केसरीसिंह बारहठ।

राजस्थान में इतिहास लेखन और इतिहास निर्माण की विशिष्ट परम्परा रही है। महाकवि चंदरबरदायी के बाद यह परम्परा महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण से चलती हुई उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में शाहपुरा के लोक विख्यात इतिहासज्ञ श्री कृष्णसिंह जी बारहठ तक पहुँची थी, जिन्होंने महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के विशाल इतिहास काव्य ग्रन्थ 'वंश भास्कर' को सुपाठ्य बनाने के लिए उदधिमंथनी टीका तैयार की थी, जो जोधपुर के मुरारीदान प्रेस से प्रकाशित हुई थी। इसी परिवार में जन्मे थे श्री केसरीसिंह बारहठ, जोरावर सिंह बारहठ एवं प्रतापसिंह बारहठ जिन्होंने मातृ–भूमि के सौभाग्यश्री का शृंगार करने के लिए अपने प्राणों को भी न्यौछावर कर दिया था।

भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में सम्पूर्ण बारहठ परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि केसरीसिंह जी का बाल्यकाल मेवाड़ में बीता तथा प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं संपन्न हुई किंतु कोटा नगर उनके जीवन के संघर्ष का केंद्र रहा और यहीं उनके जीवन के अंतिम पड़ाव की स्थली भी बनी। गुमानपुरा में अवस्थित 'माणिक भवन', जो अमर शहीद प्रतापसिंह की मातृश्री माणिक कुँवर की स्मृति में बनाया गया था, के बाहर चबूतरे में श्रीमती माणिक कुँवर के अस्थि–अवशेष सुरक्षित हैं। इसी चबूतरे पर बैठकर प्रतापसिंह के आत्मबलिदान एवं श्रीमती माणिक कुँवर की अनंत जुदाई के बाद के जीवन के एकाकी क्षण केसरीसिंह बारहठ ने बिताए थे। माणिक भवन हाड़ौती अंचल का 'स्वराज भवन' है, जहाँ देश की आजादी के ताने–बाने बुने गए थे।

श्री केसरीसिंह बारहठ महर्षि दयानन्द सरस्वती के समकालीन थे। शाहपुरा में आर्यसमाज की स्थापना के बाद उनका आर्यसमाज से उन्हें घनिष्ठ संपर्क बना। उदयपुर के दीवान सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, के साथ कार्य करने का अवसर भी मिला था। राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम से जुड़ने के बाद में तो वे राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में स्वीकार कर लिए गए थे, जिन्होंने स्वजनों और परिजनों सहित माँ भारती के प्रांगण में प्राण प्रसून अर्पित किए थे।

उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह के उदार एवं विश्वस्त सलाहकार और 'वीर विनोद' इतिहास ग्रन्थ के सुप्रसिद्ध लेखक कविराजा श्यामलदास की छत्र–छाया में अपना अध्ययन समाप्त कर सन् 1900 में कोटा के तत्कालीन शासक महाराव उम्मेदसिंह के आग्रह पर कोटा रियासत में राजकीय दायित्वों का निर्वाह करने लगे और यहीं कोटड़ी ठिकाने के कविराजा देवीदान की बहिन माणिक कुँवर से आपका विवाह हुआ और कोटा ही जीवन पर्यंत आपका कार्यक्षेत्र एवं कर्मक्षेत्र रहा।

अब तक केसरीसिंह को संस्कृत के उद्भट विद्वान और शास्त्रों के ज्ञाता के रूप में सर्वत्र मान्यता मिल चुकी थी। राजनीति, क्षात्रधर्म, समाज सुधार, शिक्षा प्रसार आदि विषयों के संबंध में प्रकाशित उनके लेखों से भारतीय पाठक वर्ग परिचित हो चला था। वे राजस्थानी एवं ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि थे। इस भाँति बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में केसरीसिंह राजपूताने में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में उभर चुके थे और राजपूताने के अधिकांश राजा महाराजा, जागीरदार एवं प्रबुद्ध जन, सामान्य–जन उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

वे सदैव स्वदेश, स्वराज्य, स्वाधीनता और स्वाभिमान के पक्षधर रहे। केसरीसिंह बारहठ के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान सर्वोपरि था। वे नहीं चाहते थे कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के रक्षक मेवाड़ के महाराणा दिल्ली दरबार में जाकर अन्य भारतीय नरेशों की भाँति तलवार जमीन पर रख कर कोर्निश बजाएँ। अतः जब उन्हें पता चला कि उदयपुर के महाराणा भी दासता के इस भव्य प्रदर्शन में सम्मिलित होने जा रहे हैं तो कवि का राष्ट्रीय स्वाभिमान आहत हो उठा। उन्होंने तत्क्षण ही 'चेतावनी रा चूंगट्या' शीर्षक से मर्मभेदी भाषा में तेरह सोरठे लिख कर महाराणा को भेजे, जिनके द्वारा उन्होंने महाराणा प्रताप द्वारा सर्वस्व त्याग एवं बलिदान की परंपरा का भान कराया। ट्रेन उदयपुर से रवाना हो चुकी थी, अतः संदेश वाहक चित्तौड़ स्टेशन पर मिला। कर्जन राजस्थान गौरव को अपने दरबार में सिर झुकाए खड़ा देखने की राह देख रहा था, लेकिन उदयपुर के महाराणा दिल्ली दरबार में न तब गए, न अब गए। इस घटना से केसरीसिंह की काव्योचित प्रतिभा का प्रसार तो हुआ, लेकिन वे ब्रिटिश सरकार के आँख की किरकिरी बन गए।

इसी बीच में 'अभिनव भारत' नाम से क्रांतिकारियों के गुप्त संगठन का गठन खरवा के ठाकुर गोपालसिंह, जयपुर के अर्जुनलाल सेठी, जोरावर सिंह एवं प्रतापसिंह के सहयोग से किया गया। 23 दिसम्बर सन् 1912 को दिल्ली में शाही हाथी की सवारी पर जाते हुए वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया था, जिसमें केसरीसिंह के छोटे भाई जोरावर सिंह एवं प्रताप सिंह सम्मिलित थे। राष्ट्रीय स्तर पर सन् 1857 के विफल स्वातंत्र्य–समर के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए यह दूसरा प्रयास था, जिसका नेतृत्व केसरीसिंह बारहठ, ठा. गोपालसिंह आदि कर रहे थे। 21 फरवरी सन् 1914 को क्रांति का शंखनाद होना था, लेकिन गुप्तचरों को भनक लग गई। सैनिक विद्रोह एवं सशस्त्र क्रांति की तमाम तैयारियाँ विफल कर दी गईं और वे 31 मार्च को गिरफ्तार कर लिए गए। 6 अक्टूबर, 1919 को केसरीसिंह

बारहठ को बीस वर्ष के आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें अंग्रेज सरकार ने एक 'बागी' के रूप में ही स्वीकार किया।

एक अविस्मरणीय क्षण – जोधपुर के आशानाड़ा स्टेशन पर दिल्ली षड़यंत्र केस के अन्तर्गत उनके पुत्र प्रतापसिंह को गिरफ्तार कर बरेली जेल में भयंकर शारीरिक यंत्रणा दी गई। उस नवयुवक को बेहद पीड़ित किया गया। इसी समय केसरीसिंह बारहठ ने बिहार के हजारीबाग जेल में आजीवन कैद काटते समय काल कोठरी में अन्नत्याग कर दिया, लगभग 30 दिन बीत चुके थे। प्रतापसिंह ने पिताश्री से मिलने की इच्छा प्रकट की और पिता–पुत्र की यह अंतिम भेंट हजारीबाग जेल में संपन्न हुई। जर्जर बागी पिता जेल के सींखचों में बंद और इधर बेड़ियों में कसा आहत प्रतापसिंह। 'वंदेमातरम्' के संबोधन के बाद सिर्फ आँसू–आँसू प्रतापसिंह सिसकते रहे।

इसी बीच जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट फीलिप लेण्ड ने आग्रह किया कि यदि रासबिहारी बोस, शचीन्द्र सान्याल और गोपाल सिंह खरवा के छिपने के ठिकाने बता दिए जाए तो प्रतापसिंह छोड़ा जा सकता है। केसरीसिंह का स्वाभिमान जाग उठा और बोले ''तुम जैसे गुलाम ही झूठन के लिए पूँछ हिलाते हैं और बाद में तुम्हारी भाषा में बोलते हैं। केसरीसिंह का बेटा शेर की तरह दहाड़ सकता है, जीवन के लिए मिमिया नहीं सकता'' और फिर बेटे की तरफ झुकते हुए बोले– ''बेटे प्रताप! आजादी बिकती नहीं है, आजादी छीनी जाती है, अपहरण करने वाले से। आजादी मिलती नहीं हासिल की जाती है, संघर्ष से और हर संघर्ष की कीमत होती है, वह हमें चुकानी है, यह एक अनंत सिलसिला है। बेटे तुम्हारे दीर्घ जीवन की अब क्या कामना करूँ, कष्टपूर्ण यात्रा है, भारत माँ के लाडले बनो, प्रताप हो, प्रताप बनो।''

भेंट का यह क्रम जल्दी ही टूट गया और प्रताप ने बरेली जेल जाकर जबान काट ली, होंठ सीं लिए, और ब्रिटिश सरकार के रहनुमाओं ने उन्हें गोली मार दी। केसरीसिंह ने पुत्र शोक की निर्मम पीड़ा को सहज रूप में स्वीकार कर लिया। हजारीबाग जेल से मुक्त होने के बाद जब वे कोटा आए तब किसी ने उनसे पूछा तो उन्होंने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया ''यह मैं आपके मुँह से सुन रहा हूँ कि वह मर गया, हाँ देश की स्वतंत्रता के लिए वह शहीद हो गया, यह मेरे लिए संतोष का विषय है।''

केसरीसिंह बारहठ एक सजग क्रांतिकारी थे और बाद में गाँधीजी से प्रभावित होकर वर्धा भी जाना चाहते थे। एक पत्र के उत्तर में उन्होंने सेवाग्राम को पत्र में लिखा– ''शेष जानकारी मेरे संबंध में पुरूषोत्तम दास टंडन और डॉ. भगवानदास केला से प्राप्त कर लें।'' यह पत्र स्थापित करता है कि केसरीसिंह बारहठ राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए लड़े जा रहे आन्दोलन की महत्वपूर्ण कड़ी थे। जीवन का कुछ अंश 74 वर्ष की अवस्था में सेवाग्राम में बापू की देखभाल में बिताना चाहते थे, लेकिन 14 अगस्त 1941 को इस महान आत्मा की जीवनलीला समाप्त हो गई।

भारत के क्रांतिकारी जनतंत्रीय आंदोलन के इतिहास में स्व. ठाकुर केसरीसिंह बारहठ का नाम सदैव अंकित रहेगा। वे उत्कृष्ट कोटि के बुद्धिजीवी, विचारक, लेखक एवं कवि थे। वे राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता और समता को सादर समर्पित थे। केसरीसिंह बारहठ राष्ट्र–भारती के चरणों में समर्पित वह पुष्प है, जिसकी सुगंध से आज राष्ट्र मंदिर सुवासित है। वे आत्मबलिदान और निःश्रेयस पूजा की साकार प्रतिमा हैं, उनकी स्मृति को प्रणाम।

अभ्यास के लिए प्रश्न

प्र. 1 'वंश भास्कर' ग्रंथ के रचयिता का नाम है–

(क) केसरी सिंह बारहठ (ख) जोरावर सिंह

(ग) प्रतापसिंह (घ) सूर्यमल्ल मिश्रण

प्र. 2 'राष्ट्र मंदिर का सुवासित पुष्प' किसे कहा गया है–

(क) दयानंद सरस्वती (ख) विवेकानंद

(ग) केसरी सिंह बारहठ (घ) सुभाषचंद बोस

प्र. 3 केसरीसिंह बारहठ का बाल्यकाल कहाँ व्यतीत हुआ–

(क) मेवाड़ में (ख) ढूंढाड़ में

(ग) हाड़ौती में (घ) मेवात में

प्र. 4 केसरीसिंह किसके समकालीन थे–

(क) दयानंद सरस्वती (ख) कबीरदास

(ग) तुलसीदास (घ) बिहारी

प्र. 5 केसरीसिंह बारहठ का अंतिम समय कहाँ व्यतीत हुआ?

प्र. 6 माणिक भवन किसकी स्मृति में बनाया गया?

प्र. 7 केसरीसिंह बारहठ सदैव किसके पक्षधर रहे हैं?

प्र. 8 उदयपुर महाराणा के स्वाभिमान को जगाने के लिए केसरीसिंह ने किस रचना का सृजन किया?

प्र. 9 केसरीसिंह को किस जेल में रखा गया?

प्र. 10 अभिनव भारत संगठन किनका था, इसमें कौन–कौन शामिल थे?

प्र. 11 प्रतापसिंह कौन थे, इन्हें गिरफ्तार क्यों किया गया?

प्र. 12 जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट फिलिप लेंड ने किस शर्त पर प्रतापसिंह को छोड़ने की बात कही?

प्र. 13 केसरीसिंह एवं प्रतापसिंह के बीच जेल में हुए संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

प्र. 14 स्वतंत्रता संग्राम में केसरीसिंह बारहठ के योगदान को विस्तारपूर्वक बताइए।

प्र. 15 केसरीसिंह के व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

आसपास –

01. यदि प्रतापसिंह की जगह आप होते तो क्या करते, कल्पना के आधार पर लिखिए।

02. 'आजादी बिकती नहीं आजादी छीनी जाती है' से केसरीसिंह का तात्पर्य क्या है।

कठिन शब्दार्थ

स्याह– काला / उद्‌भट– प्रकाण्ड/प्रसिद्‌ध / रहनुमा– दया करने वाला / बेड़ियाँ – लोहे की जंजीर जिससे कैदियों को बाँधा जाता है / दहाड़– हुंकार/जोर से चिल्लाना / कोर्निश– एक प्रकार का वाद्‌य यंत्र / जर्जर– क्षीण / हुतात्मा– बलिदानी / प्राण प्रसून– जीवन रूपी पुष्प / छत्र छाया– देखरेख में / ज्ञाता– विद्‌वान/जानने वाला / बागी– विद्रोही / यंत्रणा– यातना / सोरठा– पद रचना का एक छंद / रक्षक– रक्षा करने वाला / अभिव्यक्त– बताना/कहना/प्रस्तुत करना / आँख की किरकिरी बनना– रास्ते की रुकावट बनना या कार्य में बाधा बनना / शहीद– बलिदान होना/प्राण न्यौछावर करना / सुवासित– खुशबू से महकना